सत्य साहित्य

साक्षात्कार शताब्दी उत्सव

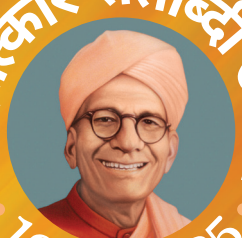

1925-2025

सत्य साहित्य, श्रीरामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष 8 / अंक 2, जनवरी 2025 • Year 8 / No. 2, January 2025

(परम पूजनीय प्रेम जी महाराज द्वारा हस्तलिखित)

तुम आओ न आओ यहां पै तुम्हें,
निशि वासर ही मैं बुलाया करूं।
तेरे नाम की माला गहूं मैं प्रभु,
मन के मनकों पै फिराया करूं॥1॥
जिस पन्थ पै पाव धरो तुम मैं,
पलकें तिस पन्थ बिछाया करूं।
भर लोचन की गगरी नित ही,
पद पंकज पै ढुलकाया करूं॥2॥
तुम आओ कभी यदि भूल यहां,
दृग नीर से पांव पखराया करूं।
मन मन्दिर को कर स्वच्छ प्रभु,
उर आसन पै पधराया करूं॥3॥
मृदु मंजुल भाव की माला बना,
तेरी पूजा का साज सजाया करूं।
अब और नहीं कुछ पास मेरे,
नित्य प्रेम प्रसून चढ़ाया करूं॥4॥

(परम पूजनीय स्वामी जी की डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- नव वर्ष की बधाई
- Bandh aur Moksha: Swami ji Maharaj
- अवतरित ग्रन्थ
- प्रारब्ध और गुरु का सान्निध्य
- श्रीरामशरणम्: एक ऐतिहासिक विवरण
- विभिन्न केन्द्रों से
- आप बीती
- कैलेन्डर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य
मूल्य (Price) ₹5

नए वर्ष की बधाई

आप के लिए मेरी कल्याण-कामना हरदम बनी रहती है। श्री राम-कृपा आप पर हो।
आप का मंगल कांक्षी
सत्यानन्द।

May Blessings of Shri Ram be with you always.
Wish you a very very very happy New Year
Lots of love, Prem

Wish you a joyous & prosperous new year.
Loving Jai Jai Ram.
L. S.

Bandh aur Moksha

सत्यानन्द

Chamba is a hilly region. In it lies a lake called Manmahesh, from which the Raavi River originates. A fair is held at that lake every year. Once, a jivanmukta muni (liberated sage) visited the Manmahesh fair. He was accompanied by two disciples.

One disciple respectfully asked, "Gurudev! Why does the soul get trapped in the cycle of births and rebirths? What is it that has bound this subtle entity?"

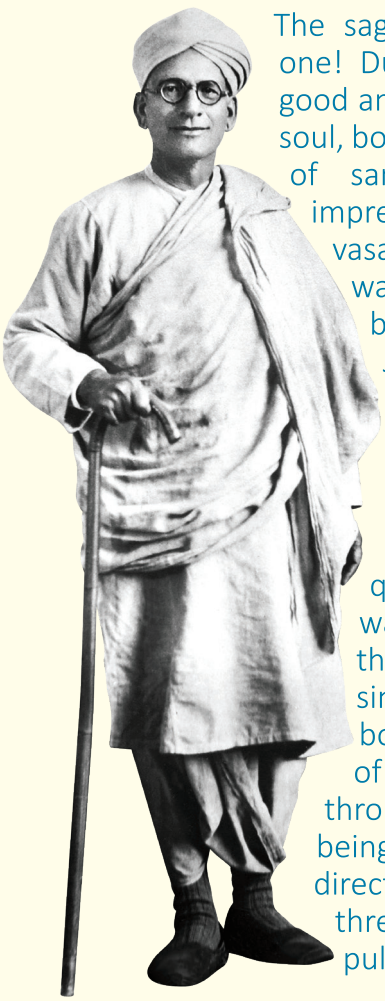

The sage replied, "Dear one! Due to one's own good and bad deeds, the soul, bound by the legacy of samskaras (karmic impressions) and vasanas (desires), wanders through births and rebirths. Just as an ant follows another ant, a row of camels moves bound by a rope, bees follow the queen bee, and water penetrates the lower ground, similarly, a being bound by the legacy of desires wanders through births.The being is drawn in the direction where the thread of samskaras pulls it. The root of this bondage is avidya (ignorance). Ignorance of one's true nature and misunderstanding of the truth is called avidya. It gives rise to the tendency to commit wrongful deeds. Pravritti refers to the tendency or inclination to act. Actions performed under this tendency create subtle desires to perform similar actions, which are termed as vasanas. Thus, the entire network of karmas is woven around the thread of avidya. This is the field where various types of karmic vines germinate, grow, thrive, and bloom. The root of the tree of bondage is avidya. The mother of all sufferings is avidya."

The second disciple prayed, "Maharaj! Please tell us the means to eradicate avidya." The sage replied, "Dear one! Just as darkness is dispelled by light, similarly, avidya ceases to exist with atma-gyan (self-knowledge). The soul is the embodiment of knowledge, imperishable, and eternal. Time has no influence over its existence. It is pure and supremely blissful in its essence. Contemplating this truth with conviction and realization is what is referred to as atma-gyan (self-knowledge). The light that eradicates avidya is the true knowledge of one's own nature. With this knowledge, the bondage of karmas is broken, and the soul attains boundless bliss. Single-minded devotion to God and righteous actions are also the means to destroy the bonds of karmas."

Excerpts from Bhakti Prakash, Katha Prakash, pp. 595-600 in old (2004 Edition), pp. 566-569 in New (2017 Edition). ■

अवतरित ग्रन्थ

प्रेम

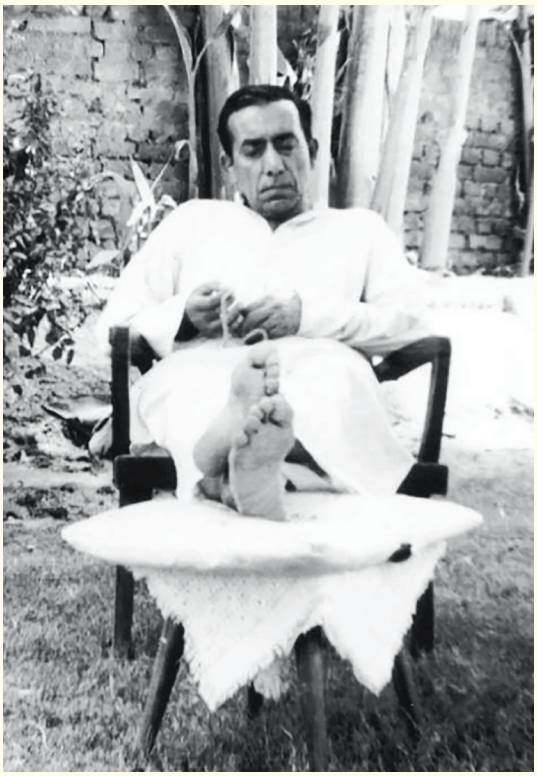

महाराज (श्री स्वामी जी महाराज) के ग्रन्थों का पाठ करना चाहिए। उनके सद्ग्रन्थों का पाठ बहुत उत्तम सत्संग है। इनको पाकर भटकने की ज़रूरत नहीं। महाराज कहा करते थे जो भटकते हैं, वह भटकते ही रहेंगे। महाराज के सद्ग्रन्थ तो अवतरित हैं। वह लिखने बैठते थे, तो आदेश आते जाते थे। जहाँ क़लम रुक जाती थी, वहीं बंद कर देते थे।

महाराज जब गीता पर भाष्य लिख रहे थे, तो उन्होंने कुछ श्लोकों का स्पष्टीकरण चाहा। आवाज़ आई कि जिसने गीता गाई है, उससे पूछो। महाराज जी ने श्री कृष्ण जी की आत्मा का आह्वान किया। उन्होंने महाराज के लिखे हुए बहुत सारे स्थानों की प्रशंसा की और कुछ को स्पष्ट करके बताया।

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के प्रवचन 28.12.1972
(श्री महाराज जी की डायरी से) ■

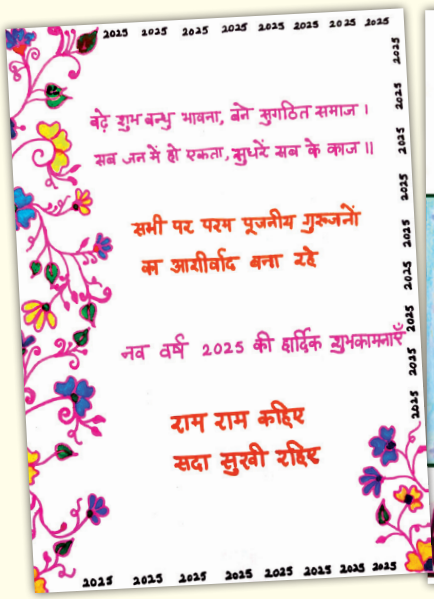

प्रारब्ध और गुरु का सान्निध्य

आज के प्रसंग में श्री रामायण जी की रचना का शुभारम्भ हो गया है। महर्षि वाल्मीकि जी ने रचना शुरू कर दी है। किस प्रकार प्रोत्साहन मिला, किस प्रकार भूमिका बनी वह सब आपने सुना। कल, आप जी की सेवा में चर्चा की जा रही थी कि सरदार शहर की महिला ने मुझे क्या सिखाया, हमारा विश्वास किस प्रकार का होना चाहिए एवं हमारी श्रद्धा किस प्रकार की होनी चाहिए। विश्वास के चार–पाँच अंग हैं तभी विश्वास पूर्ण होता है। सर्वप्रथम, हमारा विश्वास परमात्मा में अटूट होना चाहिए। गुरु मंत्र में विश्वास होना चाहिए और पूर्ण आस्था होनी चाहिए। अपनी साधना पद्धति में पूर्ण विश्वास होना चाहिए एवं संस्था के जो नियम हैं उनके प्रति व्यक्ति को एकनिष्ठ होना चाहिए तभी वह विश्वासी माना जाएगा। शास्त्रों में बहुत सी बातें लिखी हुई हैं जिन पर विश्वास करने से हमें आस्तिक माना जाता है। बेशक, हमें बहुत सी बातें समझ में नहीं आती इसके बावजूद भी उन सब बातों पर विश्वास करने वाले को ही आस्तिक कहा जाता है। कोई हमें बहुत बड़ा ज्ञानी नहीं बनना, हमारी साधना पद्धति तो विशुद्ध भक्ति मार्ग की है थोड़ा ज्ञान उसमें मिश्रित हो जाए तो परमेश्वर की कृपा है। इससे बढ़कर कोई परीक्षा हमें नहीं देनी कि ये ऐसा क्यूँ हुआ, ये ऐसा क्यूँ होता है? ये जानकारी ज्ञानियों का काम है हमारे वश की बात नहीं। कम से कम मैं ऐसा समझता हूँ कि मेरे वश की बात नहीं है, सो जो चीज़ मेरी समझ में नहीं आती मैं वहीं माथा टेक देता हूँ, ''जो तेरी इच्छा, परमात्मा! कभी समझाना चाहो तो समझा देना। यदि तू नहीं समझाना चाहता तो मेरी समझने की इच्छा बिलकुल नहीं है।'' मैं वहीं उस बात को छोड़ देता हूँ।

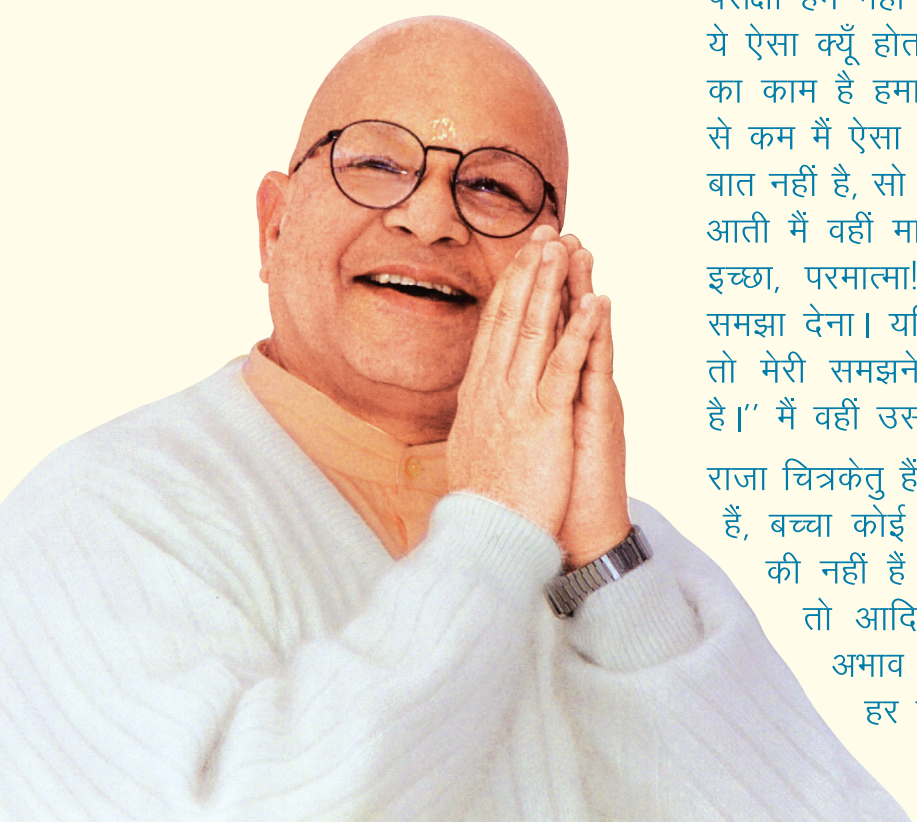

राजा चित्रकेतु हैं, सन्तानहीन हैं, बूढ़े हो गए हैं, बच्चा कोई नहीं है। ये समस्याएँ अभी की नहीं हैं। ये समस्याओं की समस्या तो आदिकाल से है। हर एक को अभाव रहा है और समस्याओं का हर एक को सामना करना पड़ा

है। बुद्धिमता इस में ही है कि हम यह जान लें कि ये समस्याएँ कभी किसी की सुलझती नहीं हैं इन्हें सुलझाते–सुलझाते आदमी अपने आप को उलझाए रखता है। जीवन सैट करने में अपने आप को अपसेट रखता है। ये हमारी जीवनशैली हो गई हुई है। समस्या आती है तो उसमें परमेश्वर का सिमरन भजन बहुत बढ़ना चाहिए। ऐसा न होकर तो समस्या का सिमरन शुरू हो जाता है। बहुत सी हमारी एनर्जी इसी काम में निकल जाती है। यहाँ सन्तान न होने की समस्या है परन्तु कहीं संतान अधिक होने की समस्या है तो कहीं संतान नालायक होने की समस्या है। कहीं पैसा कम होने की समस्या है तो कहीं पैसा अधिक होने की समस्या है। समस्या यह है कि उसे कैसे छुपा के रखा जाए। आप देखो, सोचो कि कोई समस्या रहित है तो ऐसा व्यक्ति कोई दिखाई नहीं देता।

संत महात्मा भी समस्याओं से रहित नहीं हैं, कम हैं पर हैं तो ज़रूर। सामान्य व्यक्ति अपनी समस्यायों का स्वयं स्रष्टा है वह स्वयं उनकी सृष्टि करता है।

संत महात्मा भी समस्याओं से रहित नहीं हैं, कम हैं पर हैं तो ज़रूर। सामान्य व्यक्ति अपनी समस्यायों का स्वयं स्रष्टा है वह स्वयं उनकी सृष्टि करता है। संत महात्माओं के सामने भी समस्याएँ आती हैं। प्रारब्ध के अनुसार पिछला किया हुआ है जो उसके अनुसार थोड़ा अन्तर है इसलिए वे उन समस्याओं को बहुत खुशी से, सहर्ष शिरोधार्य करते हैं और सहन करते हैं। मुस्कुराते रहते हैं, हँसते रहते हैं, ठीक है जो राम जी तेरी इच्छा है। सामान्य व्यक्ति में ये बात नहीं आती। वह राम जी की इच्छा स्वीकार नहीं करता इसलिए दुःखी होता है, इसलिए दुःखी रहता है और भटकता रहता है।

राजा चित्रकेतु बहुत मशहूर राजा हैं। इनके यहाँ सन्तान नहीं है। महर्षि अंगिरा का आगमन इनके यहाँ प्रायः होता रहता है, आते–जाते रहते हैं। संतों महात्माओं का आना बहुत शुभ माना जाता है और बहुत भाग्य की बात होती है जो परमेश्वर की कृपा का प्रतीक होता है। आज राजा चित्रकेतु ने बहुत ज़िद कर ली है, ''महाराज! क्या कभी ज़िंदगी में कोई मुझे पिता श्री नहीं कहेगा? इतने वर्षों से आप मेरे पास आ रहे हैं परन्तु आज ज़िंदगी में पहली बार मैं इतनी गहरी माँग रख रहा हूँ। इतनी ज़ोर से माँग रख रहा हूँ कि मेरे घर एक पुत्र होना चाहिए। मुझे एक पुत्र का वरदान दीजिए। ''महर्षि अंगिरा समझाते हैं,'' राजन्! मैं तुम्हें सच कहता हूँ तेरे घर पुत्र हो जाएगा इसमें कोई बात नहीं पर तू सोचे कि वह पुत्र तुम्हें सुख देने वाला होगा या दुःख देने वाला होगा तो ये तेरे भाग्य के अनुसार है। मैं समझता था मेरे सत्संग से, मेरे सान्निध्य से तेरी प्रारब्ध दबी रहेगी।''

संत ये कर सकते हैं और करते हैं। आपके कुसंस्कारों को संत अपने सान्निध्य से दबा के रखता है और सुसंस्कारों को उभारने की कोशिश करता है। इसके सुसंस्कार उभरने चाहिए बशर्ते आप सहयोग दो, नहीं तो कुसंस्कार तो उभर ही रहे हैं। आप अपने पापों का भुगतान तो भुगत ही रहे हो परन्तु संत का सान्निध्य आपके कुसंस्कारों को दबा के रखने का सामर्थ्य रखता है और

वह करता है। उसकी कोशिश होती है कि इनके कुसंस्कार दबे रहें और सुसंस्कार इनके नित्य उभरते रहें ताकि इन्हें सुख मिले, इन्हें शांति मिले, इनकी भजन पाठ में रुचि हो और इन्हीं को सुसंस्कार कहा जाता है। महर्षि अंगिरा समझाते हैं,''पुत्र पैदा होने से क्या होगा, यह मैं तुम्हें नहीं बताऊँगा। और न ही बता सकता हूँ पर तू बहुत ज़िद कर रहा है तो राजन्! ठीक है तेरे घर एक पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी।''

मैं समझता था मेरे सत्संग से, मेरे सान्निध्य से तेरी प्रारब्ध दबी रहेगी। संत ये कर सकते हैं और करते हैं। आपके कुसंस्कारों को संत अपने सान्निध्य से दबा के रखता है और सुसंस्कारों को उभारने की कोशिश करता है। इसके सुसंस्कार उभरने चाहिएं बशर्ते आप सहयोग दो, नहीं तो कुसंस्कार तो उभर ही रहे हैं। आप अपने पापों का भुगतान तो भुगत ही रहे हो परन्तु संत का सान्निध्य आपके कुसंस्कारों को दबा के रखने का सामर्थ्य रखता है और वह करता है।

कालान्तर में (दो पत्नियाँ थीं/दो रानियाँ थीं,) एक रानी के गर्भ से पुत्र की प्राप्ति हुई है। पुत्र थोड़ा बड़ा होना शुरू हो गया है, दूसरी रानी ने देखा कि इस रानी की महिमा बहुत बढ़ गई है और इसकी बहुत मानी जाती है क्योंकि ये पुत्रवान् है, मैं पुत्रहीन हूँ। मेरे यहाँ पुत्र पैदा नहीं हुआ तो उसे जलन पैदा हो गई और उसने उस पुत्र को मरवा दिया। राजा फिर पुत्रहीन हो गए। पहले पुत्रहीन होने का इतना दुःख–शोक नहीं था जितना कि अब है। खुद का पुत्र, हो कर मर गया है। महर्षि अंगिरा का फिर आना हुआ है। लेकिन महर्षि अंगिरा महसूस कर रहे हैं कि राजा इतना शोकग्रस्त है, इतना दुःखी है कि मैं अपने उपदेश से इसके शोक को दूर नहीं कर सकता। मेरे उपदेश का इसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं हो रहा, इसलिए देवर्षि नारद को जाकर महर्षि प्रार्थना करते हैं,''महाराज! राजा चित्रकेतु मेरा भक्त है, आप मेरे स्वामी हैं। मैं आप ही से निवेदन करता हूँ, प्रार्थना करता हूँ कि महाराज! चलिएगा उस मेरे भक्त का शोक और दुःख दूर करिएगा।''

देवर्षि नारद पधारते हैं। देवर्षि नारद आकर सांत्वना देते हैं, उपदेश देते हैं, समझाते हैं, ''राजन्! इस संसार में पुत्र चार प्रकार के हुआ करते हैं। सर्वप्रथम, शत्रु पुत्र जो पिछले जन्मों की शत्रुता निभाने के लिए आए हैं। अपनी शत्रुता निभाई और चलते बने। यूँ कहिएगा कि जिंदगी भर दुःख देने वाले पुत्र। चाहे वह वियोग का दुःख दे गए जो ज़िंदगी भर का दुःख है। बेशक पुत्र अपने जीवनकाल में बहुत अच्छा हो, बहुत सुख देने वाला हो लेकिन मर जाता है तो ज़िंदगी भर का दुःख दे जाता है। परमात्मा जाने ऐसे पुत्र को क्या कहा जाए! लेकिन शास्त्र तो ऐसे पुत्रों को जो दुःख देने वाले पुत्र हैं जीवन भर का दुःख देकर जाते हैं जीवन भर जिनकी याद कभी खत्म नहीं होती, हमेशा अपनी याद से दुःख देते रहते हैं ऐसे पुत्र को शत्रु पुत्र कहते हैं।

देवर्षि नारद राजा चित्रकेतु को समझा रहे हैं, ''दूसरे पुत्र वह पुत्र हैं राजन्! जो पिछले जन्म के ऋणदाता हैं और अपना ऋण वसूल

करने के लिए आए हुए हैं।'' मैं तो माता अनपढ़ हूँ, यही समझता हूँ कि हर कोई इस संसार में अपने कर्मों का ऋण भुगतने के लिए आया हुआ है। उन्हें उतारने के लिए आया हुआ है ऐसा ही हर एक को समझना चाहिए। कहीं पैसे से वह ऋण उतरता–चढ़ता है तो कहीं पापकर्म से, कहीं किसी से तो कहीं किसी से। कहीं किसी को व्यापार में घाटा है, कहीं कुछ – कहीं कुछ। कहीं बच्चे उजाड़ने वाले मिल जाते हैं, कहीं कहना मानने वाले नहीं मिलते। किसी–किसी प्रकार से या हर प्रकार से यूँ कहिएगा कि हर कोई अपने कर्मों का ऋण वसूल करने या उतारने के लिए आया हुआ है। दूसरे पुत्र वह पुत्र हैं जो ऋणदाता हैं पिछले जन्म का ऋण लिया हुआ है। इस जन्म में वे ऋण वसूल करने के लिए आए हुए हैं। जैसे ही ऋण वसूल होता है उनकी जीवन यात्रा भी खत्म हो जाती है।

तीसरे पुत्र, वह हैं जिन्हें उदासीन पुत्र कहा जाता है। जब तक विवाह नहीं होता माता–पिता के होते हैं विवाह होते ही पत्नी के हो जाते हैं, उन्हें उदासीन पुत्र कहा जाता है। माता–पिता विवाह करते हैं कि ये सोच कर हमारे पुत्र को हमारी सेवा करने में कठिनाई है। बेचारे के दो ही हाथ हैं विवाह हो जाएगा तो चार हाथ हो जाएँगे फिर सेवा करने में आसानी रहेगी। नहीं पता कि पुत्र चार हाथ की बजाए चार पाँवों वाले बन जाते हैं। पशु बन जाते हैं पुत्र, सभी नहीं। लेकिन शास्त्र इस प्रकार की बात समझाता है वही आपकी सेवा में कही जा रही है।

चौथे एवं अंतिम प्रकार के पुत्र हैं सेवक पुत्र, जो अपने माता पिता की ही नहीं सबकी सेवा करने वाले हुआ करते हैं, होनहार पुत्र। अच्छे माँ बाप के संस्कार लिए हुए, अपने अच्छे संस्कार लाए हुए पुत्र जिन्हें संसार अपना पुत्र मानने लग जाता है अपना बच्चा मानने लग जाता है। सबकी सेवा करने वाले, सबका भला चाहने वाले, सबका हित करने वाले पुत्र। ''राजन्! तेरा पुत्र, शत्रु पुत्र था।'' यूँ कहिएगा कि इतनी देर तक महात्मा अंगिरा ने राजा चित्रकेतु के प्रारब्ध को दबा के रखा ताकि इस दुःख से वह बचा रहे, लेकिन प्रारब्ध की ही जीत हुई। ऐसा प्रायः होता है। संतों के सान्निध्य से लोग लाभ नहीं लेते, नहीं ले पाते फिर क्या होता है, यही जो राजा चित्रकेतु के साथ हुआ।

पुनः कहूँगा हमारा मार्ग भक्ति का मार्ग है, विश्वास का मार्ग है। जो कुछ सीखने को मिलता है वह सीखिए और बस मस्त रहिएगा। किंतु परन्तु करने की हमें आवश्यकता बिलकुल नहीं है। श्राद्ध करने से पितरों को कुछ मिलता है कि नहीं मिलता ये जानकारी हमारे वश की नहीं है। शास्त्र कहता है उन्हें मिलता है तो मिलता होगा। जो भी शास्त्र कहता है ऐसी बात पर हम सन्देह करने वाले कोई नहीं हैं। मिलता होगा और कुछ हो न हो एक चीज़ तो हो रही है कि कम से कम श्राद्ध के दिनों अपने हाथों से ब्राह्मणों को भोजन तो खिलाया जाता है। कुछ दान तो हो गया बस, इतना हमारे लिए पर्याप्त है। ये बेशक सारा जीवन भी करना पड़े तो पीछे नहीं हटिएगा।

(श्री महाराज जी का प्रवचन 8.9.2007) ■

श्रीरामशरणम् - एक ऐतिहासिक विवरण : ज्वाली

(श्रीरामशरणम् एक ऐतिहासिक विवरण के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)

ईश्वर की अपार कृपा व गुरुजनों की असीम कृपा से दो साधक श्री अमृतवाणी पाठ व गुरुजनों के अच्छे नियमों से प्रभावित होकर स्वामी जी के निर्वाण दिवस, नवम्बर 1989 के सत्संग में श्रीरामशरणम् दिल्ली गए। वहाँ श्री प्रेम जी महाराज जी के दर्शन व श्री अधिष्ठान जी के दर्शन से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने श्री प्रेम जी महाराज जी से नाम दीक्षा लेने का संकल्प कर लिया। ईश्वर कृपा से श्री प्रेम जी महाराज जी ने नाम साधकों के हृदय में स्थापित कर दिया। परिणाम स्वरूप इन साधकों ने वापिस आकर अपने परिवार व रिश्तेदारों को इसकी जानकारी दी। एक दिन उन्होंने मकड़ाहन गाँव व अपने रिश्तेदारों को इकट्ठा कर के श्री अमृतवाणी जी का संकीर्तन किया। सबको यह अमृतवाणी जी का पाठ बहुत ही अच्छा लगा क्योंकि सत्संग समय पर शुरू होता था, समय पर खत्म होता। सत्संग में किसी भी प्रकार का कोई आडम्बर नहीं था। धीरे–धीरे और लोग सत्संग में आना शुरू हो गए।

महाराज श्री विश्वामित्र जी के तिलक दिवस के बाद एक साधक के द्वारा विनय प्रार्थना की गई कि ज्वाली में पधार कर लोगों को राम नाम से जोड़ा जाए। प्रार्थना स्वीकार की गई तथा पहली बार श्री महाराज जी 15 अप्रैल 1996 को ज्वाली पधारे। श्री अमृतवाणी सत्संग एक साधक के निवास स्थान पर हुआ। श्री महाराज जी के दर्शन व प्रवचनों के लिए आए हुए साधक इतने प्रभावित हुए कि नाम दीक्षा लेने के लिए तैयार हो गए। उस दिन 202 साधकों ने नाम दीक्षा ली।

परमेश्वर कृपा से श्री महाराज जी लगातार 1999 तक यहाँ पधारते रहे तथा लोगों को परमेश्वर से जोड़ते रहे। हर बार नाम दीक्षा लेने वालों की संख्या बढ़ती रही। तब सभी की इच्छा को जानकर तथा परमेश्वर की प्रेरणा से श्रीरामशरणम् के लिए ज़मीन का प्रयास किया गया। परिणाम स्वरूप एक

साधक ने अपनी ज़मीन देने की इच्छा ज़ाहिर की जिसकी सूचना श्री महाराज जी को दी गई। उन्होंने ज्वाली पधारने पर ज़मीन देने वाले साधकों से बातचीत की और फिर उनकी सहमति मिलने पर श्री महाराज जी ने श्रीरामशरणम् बनाने की स्वीकृति दे दी।

29 नवम्बर 2003 को श्री महाराज जी के कर कमलों द्वारा श्रीरामशरणम् ज्वाली का विधिवत् उद्घाटन किया गया। श्रीरामशरणम् का क्षेत्रफल लगभग 10 कनाल है। उस समय 80x40 फुट का एक हॉल तथा साथ में जाप कक्ष बनाया गया। इसके अलावा पुरुषों व महिलाओं के लिए शौचालय बनाए गए। श्री महाराज जी ने यहाँ की सोसायटी को श्रीरामशरणम् समर्पित कर दिया। वर्तमान समय में हॉल के ऊपर एक और हॉल तथा पीछे भी ऊपर नीचे दो हॉल बनाए गए हैं, साथ में श्री महाराज जी का कक्ष और Waiting Room भी बनाया गया है। जब भी श्री महाराज जी ज्वाली पधारते तो असंख्य साधक नाम दीक्षा लेते रहे।

वर्तमान में जब भी विशेष सत्संग होता है तो श्रीरामशरणम् में गुरुजनों के द्वारा बनाए नियम व श्री अमृतवाणी संकीर्तन सभी को प्रभावित करते हैं। लोगों की रुचि दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। श्रीरामशरणम् का भी समय–समय पर विस्तार किया जा रहा है ताकि आने वाले साधकों को सुविधा मिलती रहे व 'राम–नाम' का प्रचार अधिक से अधिक होता रहे। श्रीरामशरणम् के इक्कीस वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में दिनांक 29 नवम्बर से 2 दिसम्बर, 2024 तक तीन रात्रि का खुला सत्संग और अखण्ड जाप का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें स्थानीय लोगों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। प्रत्येक साधक ने 50 हज़ार जाप किया इसमें लगभग 200 साधकों ने भाग लिया। परमेश्वर की कृपा से सारे कार्यक्रम सुचारु रूप से चल रहे हैं। श्रीरामशरणम् का सत्संग गुरुजनों की कृपा से सुचारु रूप से चल रहा है। ■

शुभ समाचार

परमात्मा श्री राम जी एवं परम पूजनीय गुरुजनों की कृपा, आशीर्वाद व प्रेरणा से श्रीरामशरणम् के एक समर्पित साधक श्री कृष्ण कुमार राठौर जी ने परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के साहित्य पर लिखे शोध ग्रंथ ''स्वामी सत्यानन्द के साहित्य में भक्ति दर्शन एवं मानवीय मूल्य'' को स्वीकार करके, 27 नवंबर 2024 को जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर मे पी.एच.डी (Ph.D) की उपाधि प्रदान की है।

आशा है अकादमिक रूप से यह शोध श्रीरामशरणम् के इतिहास में मील का पत्थर सिद्ध होगी एवं अन्य अनेक अध्ययनशील साधकों को इस दिशा में और अधिक कार्य करने के लिए, परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के सद्ग्रन्थों के गहन अध्ययन और अलग–अलग विषयों पर अनेकानेक शोध करके बृहद् जन समाज को शिक्षा जगत् के माध्यम से परम पूजनीय गुरुजनों की विराट सूक्ष्म सत्ता, श्रीरामशरणम् व राम नाम से जुड़ने के लिए प्रेरित करेगी। ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

(सितम्बर 2024 से दिसम्बर 2024)

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **गुरदासपुर**, पंजाब में 27 से 29 सितम्बर को तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में 261 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 30 सितम्बर से 3 अक्तूबर तक तीन रात्रि साधना सत्संग का आयोजन हुआ।
- **हरिद्वार** में 3 अक्तूबर से 12 अक्तूबर तक शारदीय नवरात्रों में रामायणी सत्संग का आयोजन हुआ।
- **पठानकोट**, पंजाब में 26 से 27 अक्तूबर को दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में चार सौ से अधिक साधक सम्मिलित हुए और 197 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **ग्वालियर**, मध्यप्रदेश में 6 से 7 नवम्बर को दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिससे पहले 5 नवम्बर को 24 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **जम्मू** में 8 से 10 नवम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिस में पाँच सौ से अधिक साधक सम्मिलित हुए और 210 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 11 से 14 नवम्बर तक परम पूजनीय स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में तीन रात्रि साधना सत्संग का आयोजन हुआ, जिसमें 11 नवम्बर को 15 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **गुना**, मध्यप्रदेश में 15 नवम्बर को श्रीरामशरणम् भवन के भूमि एवं शिला पूजन के अवसर पर विशेष सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें लगभग 2500 लोग सम्मिलित हुए और 596 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कठुआ**, जम्मू कश्मीर में 17 नवम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 68 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सुजानपुर**, पंजाब में 22 से 24 नवम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 227 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **फाज़लपुर**, कपूरथला, पंजाब में 29 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक तीन रात्रि साधना सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 9 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **आलमपुर**, हिमाचल प्रदेश में 3 दिसम्बर को एक दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ जिसमें 52 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **मैलबोर्न**, आस्ट्रेलिया में 6 से 8 दिसम्बर तक तीन दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **दिल्ली**, श्रीरामशरणम् में सितम्बर से दिसम्बर तक 117 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **देवास**, मध्यप्रदेश में 15 दिसम्बर को विशेष अमृतवाणी संकीर्तन एवं प्रवचन का कार्यक्रम हुआ जिसमें 103 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **नागौद**, जिला सतना, मध्यप्रदेश में 15 दिसम्बर को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का भव्य उद्घाटन् हुआ जिसमें 627 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **सूरत**, गुजरात में 21 से 22 दिसम्बर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसमें 22 दिसम्बर को नाम दीक्षा होगी।
- **भिवानी**, हरियाणा में 28 से 29 दिसम्बर तक दो दिवसीय खुले सत्संग का आयोजन होगा जिसमें 29 दिसम्बर को नाम दीक्षा होगी।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **नागौद**, जिला सतना, मध्यप्रदेश में 15 दिसम्बर को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का भव्य उद्घाटन् हुआ जिस में लगभग 1500 व्यक्ति सम्मिलित हुए।
- **जंडियाला गुरु**, पंजाब में श्रीरामशरणम् में खुले सत्संग के लिए अखण्ड जाप का कमरा व साधकों के ठहरने के लिए स्थान का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है, जिसका उद्घाटन मार्च 2025 में होने की सम्भावना है। ■

गुरुजनों का अपार प्रेम

मैंने 2013 में दिल्ली के श्रीरामशरणम् में राम–नाम की दीक्षा ली, क्योंकि मेरे ससुराल के सभी सदस्य दीक्षित थे और अमृतवाणी जी का नियमित पाठ करते थे। मैंने भी राम नाम की दीक्षा ली लेकिन उस समय यह केवल एक रस्म जैसा लगा। मेरे ससुराल के शहर में श्रीरामशरणम् था। जब मैं ससुराल में होती तो सभी के साथ रविवार को सत्संग में जाया करती थी।

हालांकि, अपने पति की पोस्टिंग के कारण हमें अलग–अलग स्थानों पर जाना पड़ता था। जहाँ श्रीरामशरणम् नहीं होता था, हम घर पर ही अमृतवाणी का पाठ करते थे लेकिन मैं इसे नियमित रूप से नहीं कर पाती थी। मेरे पति का गहरा विश्वास था कि 'राम नाम' और गुरु में असीम शक्ति है। वे हमेशा कहते थे कि गुरु की आज्ञा में रहना चाहिए। यदि साधना कम भी हो तो भी गुरु आपकी उन्नति के लिए पर्याप्त कृपा कर देते हैं। बस नियम से समझौता न करें और श्रीरामशरणम् जाते रहें। जब भी हम गृह नगर जाते तो मैं देखती कि वे सेवा करते और श्रीरामशरणम् जाते। उनका विश्वास मुझे प्रेरित करता लेकिन मैं इसे गहराई से नहीं समझ पाती थी।

फिर हमारा ट्रांसफर दिल्ली हो गया। कोविड के समय श्रीरामशरणम् में सीमित समय के लिए ही जाप होते थे और अधिक भीड़ की अनुमति नहीं थी। 2022 से सब कुछ सामान्य हुआ। मेरे बच्चे भी बड़े हो गए और स्कूल जाने लगे। तब मैंने बच्चों के बड़े होने पर सत्संग में जाना शुरू किया। वहाँ बच्चों और उनकी माताओं के लिए अलग हॉल था जहाँ छोटे बच्चे अपनी माताओं के साथ बैठ सकते हैं।

मैंने रविवार सत्संग में जाना शुरू किया। श्रीरामशरणम् हमारे घर से 30 किलोमीटर दूर है, फिर भी मैं वहाँ जाती थी। महाराज जी के प्रवचन सुनकर ऐसा लगता था जैसे वे मेरी ही स्थिति का वर्णन कर रहे हों। ऐसा अनुभव होता था जैसे महाराज जी मुझे व्यक्तिगत रूप से जानते हों और मुझे बता रहे हों कि तुम जहाँ हो, वहीं साधना शुरू करो। मैंने भी महाराज श्री की बात मानी जो सुना, उसे करने लगी। जब मैं श्रीरामशरणम् जाती थी, तो मुझे श्री प्रेम जी महाराज की तरफ देखकर ऐसा लगता था जैसे मेरी जाप में रुचि और बढ़ गई है। एक रात सपने में मुझे प्रेमजी महाराज जी दिखाई दिए। मैं जाप कर रही थी, उन्होंने आकर मुझे देखा और फिर चले गए।

अब मैं मंगलवार के जाप और पूर्णिमा के दिन होने वाले विशेष जाप में भी जाने लगी। बच्चों को स्कूल छोड़कर और घर के काम पूरे कर, सुबह 9:30 बजे घर से निकलती। रास्ते में मेट्रो में नाम जाप करती रहती। श्रीरामशरणम् में 1.30 घंटे जाप करती और जल्दी लौट आती। आने–जाने में 2.30 घंटे लगते, और जाप के लिए मुझे 1 से 1.30 घंटे ही मिलते। मैंने महसूस किया कि जब भी मैं श्रीरामशरणम् जाती, जैसे ऑटो वाले, जो शेयरिंग में जाते थे, मेरे लिए ही इंतजार कर रहे हों। मेट्रो में भी मेरे लिए सीट खाली रहती थी। ऐसा लगता था जैसे मेरा आना–जाना बहुत आसान और सुगम हो गया हो।

घर पर भी मैं महाराज जी के प्रवचन और भजन सुनती थी। धीरे–धीरे साधना के प्रति मेरी रुचि बढ़ने लगी। महाराज श्री महीने के पहले रविवार को ध्यान कराते हैं, यह मेरे लिए सीखने का अच्छा अवसर था। मैंने सुबह 4 बजे उठ कर ध्यान करना शुरू किया। महाराज जी ने जैसे आसन में बैठने का तरीका बताया, उसी प्रकार ध्यान में बैठना शुरू किया। एक दिन मेरा अलार्म नहीं बजा पर सुबह 4 बजे मेरे घर की घंटी बजी। मुझे लगा कि मेरे घर की घंटी केवल मुझे जगाने के लिए बजी हो। मैंने अपने पति को भी ध्यान में बैठने के लिए कहा और इसके लिए मैंने परमात्मा से प्रार्थना की। अब वे भी सुबह ध्यान के लिए उठने लगे। जहाँ भी वे

बाहर रहते, वहाँ भी सुबह ध्यान के लिए समय निकालने लगे।

एक दिन मेरे पति ने मुझे बताया कि जब वे हरिद्वार सत्संग में गए थे तब उन्हें पूजनीय विश्वामित्र महाराज जी सपने में दिखाई दिए। वे अखंड जाप के कक्ष में थे। महाराज जी ने उन्हें देखा, मुस्कुराए, जैसे उनकी जाप साधना को सराहा हो। इसके बाद महाराज श्री स्वयं भी जाप करने के लिए बैठ गए। मेरे पति ने बताया कि वे इस अनुभव से अत्यधिक भावुक हो गए और डर भी गए कि कहीं जाप में कोई ग़लती न हो जाए या उन्हें नींद न आ जाए। फिर भी उन्होंने पूरी श्रद्धा से जाप करना शुरू किया। इसी दौरान उनकी नींद खुल गई। यह अनुभव उन्होंने सत्संग के दौरान प्राप्त किया और बाद में मुझे बताया।

सपने वाले दिन सुबह, मेरे पति जब महाराजश्री के कक्ष के सामने पहुँचे, तो वे डरते–डरते खड़े थे। तभी एक वरिष्ठ साधक ने उनसे पूछा, क्या आप दर्शन करना चाहते हैं? जब उन्हें महाराजश्री के कक्ष में जाने की अनुमति मिली, तो उन्होंने देखा कि कक्ष की सफाई के लिए दरवाजा खोला गया था। वे भीतर गए और स्वामीजी महाराज के चित्र के सामने प्रणाम किया। उस पल ऐसा लगा, मानो स्वयं महाराजश्री ने उन्हें भीतर बुलाकर आशीर्वाद दिया हो। कक्ष से बाहर आते हुए वे अत्यधिक भावुक हो गए और उनके आँसू रुकने नहीं पाए। उस क्षण उन्होंने महसूस किया कि गुरुजनों का इतना अपार प्रेम मिल गया है कि अब जीवन में कुछ और पाने की चाह नहीं बची। ■

श्रीरामशरणम् दिल्ली में भगवत् साक्षात्कार शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में श्री रामायण जी के कार्यक्रमों का विवरण (ये कार्यक्रम दैनिक व साप्ताहिक सत्संग के बाद आरम्भ होंगे)

जनवरी 25.1.2025 से 26.1.2025
शनिवार–रविवार

फरवरी 22.2.25 से 23.2.25
शनिवार–रविवार

Calendar

Sadhna Satsang (January to December 2025)

Indore	3 to 6 January	Friday to Monday
Hansi	7 to 10 February	Friday to Monday
Haridwar	8 to 13 April	Tuesday to Sunday
Haridwar (for Jhabua Sadhaks)	18 to 21 April	Friday to Monday
Haridwar (for Jhabua Sadhaks)	23 to 26 April	Wednesday to Saturday
Haridwar	30 June to 3 July	Monday to Thursday
Haridwar	5 to 10 July	Saturday to Thursday
Haridwar (Ramayani)	23 September to 2 October	Tuesday to next Thursday
Haridwar	11 to 14 November	Tuesday to Friday
Kapurthala (Fazalpur)	21 to 24 November	Friday to Monday

Note: In Haridwar, on 2nd October on the occasion of Param Pujniya Shree Prem Ji Maharaj's birthday, Pushpanjali will start at 6:30 am.

Purnima (January to December 2025)

January	13	Monday
February	12	Wednesday
March	14	Friday
April	12	Saturday
May	12	Monday
June	11	Wednesday
July	10	Thursday
August	9	Saturday
September	7	Sunday
October	7	Tuesday
November	5	Wednesday
December	4	Thursday

Naam Deeksha In Shree Ramsharnam Delhi (January to December 2025)

January	26	Sunday 11:00 am
February	2	Sunday 11:00 am
March	16	Sunday 11:00 am
April	13	Sunday 10.30 am
May	18	Sunday 10.30 am
July	10	Thursday 4:00 pm
August	17	Sunday 10.30 am
September	14	Sunday 10.30 am
October	19	Sunday 10.30 am
November	30	Sunday 11:00 am
December	14	Sunday 11:00 am

Open Satsang (January to December 2025)

Jhabua	12 to 14 January	Sunday to Tuesday
Pune	18 January	Saturday
Bikaner	25 January	Saturday
Mumbai	15 to 16 February	Saturday to Sunday
Bilaspur (HP)	21 to 23 February	Friday to Sunday
Pilibanga	25 to 26 February	Tuesday to Wednesday
Sardarshahar	2 to 3 March	Sunday to Monday
Ratangarh	8 to 9 March	Saturday to Sunday
Delhi Holi Satsang	12 to 14 March	Wednesday to Friday
Kapurthala (Fazalpur)	22 to 23 March	Saturday to Sunday
Narot Mehra	26 March	Wednesday
Hisar	29 to 30 March	Saturday to Sunday
Jhabua-Maun Sadhna	29 March to 6 April	Saturday to Sunday
Bhareri	6 April	Sunday
Mandi	27 April	Sunday
Shanag	4 to 5 May	Sunday to Monday
Hoshiarpur	11 May	Sunday
Saylorsburg (USA)	29 May to 1 June	Thursday to Sunday
Manali	14 to 16 June	Saturday to Monday
Kandaghat	22 June	Sunday
Delhi	27 to 29 July	Sunday to Tuesday
Rohtak	9 to 10 August	Saturday to Sunday
Rewari	5 to 6 September	Friday to Saturday
Jalandhar	21 September	Sunday
Pathankot	4 to 5 October	Saturday to Sunday
Amritsar	12 October	Sunday
Gurdaspur	24 to 26 October	Friday to Sunday
Jammu	31 October to 2 November	Friday to Sunday
Sujanpur	7 to 9 November	Friday to Sunday
Gwalior	15 to 16 November	Saturday to Sunday
Melbourne (Australia)	5 to 7 December	Friday to Sunday
Kathua	7 December	Sunday
Bhiwani	12 to 13 December	Friday to Saturday
Alampur	21 to 23 December	Sunday to Tuesday
Surat	27 to 28 December	Saturday to Sunday

Note: In Delhi on 15th March, on the occasion of Param Pujinya Maharaj's birthday, Akhand Ramayan Ji Path will start in daily satsang after Shri Amritvani Sankirtan.

Naam Deeksha in Other Centers (January to December 2025)

Indore	5 January	Sunday
Bolasa	09 January	Thursday
Dahod	10 January	Friday
Banswara	11 January	Saturday
Jhabua	12 January	Sunday
Pune	18 January	Saturday
Ludhiana	19 January	Sunday
Banmore MP	22 January	Wednesday
Bikaner	25 January	Saturday
Faridabad	26 January	Sunday 4.00 PM
Rohtak	2 February	Sunday 3.00 PM
Guna	2 February	Sunday 6.00 PM
Hansi	9 February	Sunday
Mumbai	16 February	Sunday 6.00 PM
Ram Tirath	20 February	Thursday
Bilaspur (HP)	23 February	Sunday
Pilibanga	26 February	Wednesday
Amarpatan MP	1 March	Saturday
Sardar Shahar	3 March	Monday 11.00 AM
Ratangarh	8 March	Saturday
Kapurthala (Fazalpur)	23 March	Sunday
Narot Mehra	26 March	Wednesday
Hisar	30 March	Sunday
Bhareri	6 April	Sunday
Haridwar	13 April	Sunday
Jawali	14 April	Monday
Mandi	27 April	Sunday
Hoshiarpur	11 May	Sunday
Faridabad	25 May	Sunday
Saylorsburg (USA)	29 May	Thursday
Saylorsburg (USA)	1 June	Sunday
Kishtwar JK	7 June	Saturday
Bhaderwah JK	8 June	Sunday
Manali	16 June	Monday
Kandaghat	22 June	Sunday
Haridwar	10 July	Thursday
Chandigarh	24 August	Sunday
Jalandhar	21 September	Sunday
Pathankot	5 October	Sunday
Amritsar	12 October	Sunday
Gurdaspur	26 October	Sunday
Jammu	2 November	Sunday
Sujanpur	9 November	Sunday
Gwalior	16 November	Sunday
Kapurthala (Fazalpur)	23 November	Sunday
Melbourne (Australia)	7 December	Sunday
Kathua	7 December	Sunday
Bhiwani	13 December	Saturday
Alampur	23 December	Tuesday
Surat	28 December	Sunday

Rainbow Writing

Bring out your crayons, colour pencils and sketch pens and enjoy writing the word RAM in different fonts/styles, and colour them. Use the examples for inspiration and let your creativity flow.

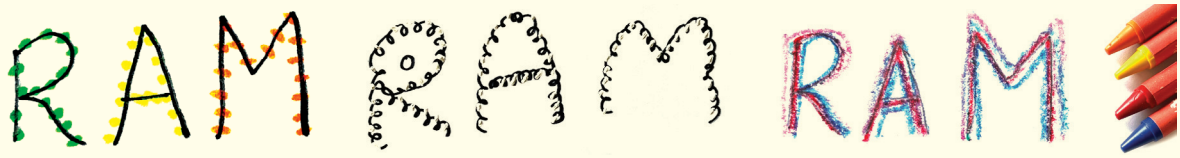

How are you feeling today?

Sit in a comfortable position for 2 minutes, place your hands at your heart centre (try to feel your heartbeat) and breathe in and breathe out slowly. Think about everything beautiful in your life, everything that you are grateful for, and think about how that makes you feel. After 2 minutes, circle the feeling words that you most relate to. You may circle as many words as you like.

Bubbly Cheerful Glad Loved

Peaceful Wonderful Satisfied

Strong Doubtful Uncertain Confused

प्रत्येक दीक्षित साधक का यह कर्तव्य है कि वह सत्य साहित्य पत्रिका खरीदें और उसे संग्रहीत करके अपने पास सुरक्षित रखे ताकि समय–समय पर उसका स्वाध्याय, चिंतन, मनन किया जा सके।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर-4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादक: मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

E-mail of Satya Sahitya: srs.satyasahitya@gmail.com
E-mail of Shree Ramsharnam: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924